ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 131-133

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

बुद्ध चरितम् एवं समसामयिक साहित्य : एक विश्लेषण

कमलेश कुमार

शोध अध्येता– प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय– गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 16.02.2022, Revised- 18.02.2022, Accepted - 21.02.2022 E-mail: kamlesh1086@gmail.com

सारांशः – *महाकवि अश्वघोष कृत बुद्धचरित न केवल बौद्ध दर्शन के इतिहास में अपितु संस्कृत काव्यों की समस्त परम्परा में भी गौरवमय स्थान रखते है। उन्होंने अपने सभी काव्यों के माध्यम से बुद्ध भक्ति का ही प्रचार–प्रसार किया। बुद्ध चरित में गौतम बुद्ध के जन्म से लेकर उनके महापरिनिर्वाण तक के समस्त जीवन वृत काव्यमय पद्धति से वर्णित हुआ है।*[1]

प्राचीन कोशल जनपद के प्रधान नगर कपिलवस्तु में शाक्य लोगों के गणराज्य में भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था।[2] *इनके जन्म के समय ज्योतिषियों ने इनके विषय में वैराग्य धारण करने की भविष्यवाणी की थी जो सत्य हुआ राजसी भोग विलास में रहने पर भी इनकी चित्तवृत्ति सदा वैराग्य में लगी रहती थी। किन्तु जब इन्होंने अपने भ्रमण के समय एक वृद्ध पुरुष, रोगी, शव तथा संन्यासी को देखा तब उनके मन में संसार की क्षणभंगुरता को देखकर मन खिन्न हो उठा और उन्होंने विशाल साम्राज्य के भोग विलास को त्यागकर संन्यास का मार्ग ग्रहण किया और जीवन के जन्म–मरण से छुटकारा पाने के लिए ज्ञान की खोज में निकल पड़े। भगवान तथागत ने पण्डितों की संस्कृति भाषा का परित्याग कर जनसाधारण की भाषा पाली जो उस काल की लोक भाषा थी, उपदेश दिये।*[3]

कुंजीभूत शब्द– अश्वघोष कृत, संस्कृत काव्यों, परम्परा, गौरवमय स्थान, प्रचार–प्रसार, महापरिनिर्वाण, जीवन वृत।

जिस समय भगवान बुद्ध का लोक में जन्म हुआ उस समय देश में अनेक बाद प्रचलित थे। समाज में बहुत उथल–पुथल चल रहा था। लोगों की जिज्ञासा जग उठी थी कि परलोक है या नहीं, मरने के बाद जीव का अस्तित्व रहता है या नहीं, कर्म है या नहीं इस प्रकार के अनेक प्रश्न लोगों के कौतुहल को विषय बना हुआ था इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए लोग उत्सुक थे। ब्राह्मणों और श्रमणों में विचार–विमर्श विशेष रूप होती थी।

श्रमण वेदों के प्रमाण को स्वीकार नहीं करते थे न ही यज्ञ के क्रिया–कलापों को महत्व देते थे।[4] भगवान तथागत अपने समसामयिकों चिन्तकों की भाँति अपने जीवन में ही दुःख की अनुभूति करने के उपरान्त उसकी व्याख्या किये साथ ही दुःख से मुक्ति मार्ग भी ढूढ़ निकाले।[5]

अवदान साहित्य का प्रथम ग्रन्थ महावस्तु है जिसे महासांघिक बौद्ध निकाय का विनय ग्रन्थ माना गया है।[6] जिसे सबसे पहले ई0 सेनार्ट ने इसे टिप्पणी सहित तीन खण्डों से पेरिस से 1882–1897 ई0 में प्रकाशित किया था। सेनार्ट द्वारा सम्पादित संस्करण का जे0जे0 जोन्स ने तीन खण्डों में अंग्रेजी अनुवाद कराकर 1949 ई0 में प्रकाशित कराया। कालान्तर में 1977 ई0 में संस्कृत बौद्ध साहित्य श्रृंखला में मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा के अन्तर्गत महावस्तु भाग–1 नाम से श्री शीतांश शेखर बाग्ची शर्मा के सम्पादकत्व में 1970 ई0 में यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ को प्रथम–द्वितीय शताब्दी ई0 में रखा गया है। इस बौद्ध ग्रन्थ में बुद्ध और बोधिसत्व की जीवनी की एक सौ अवदान कथाएँ संग्रहीत है। यह ग्रन्थ ऐतिहासिक घटनाओं से परिपूर्ण ग्रन्थ है।[7]

दिव्यावदान विशिष्ट अवदान कथाओं का संग्रह है जिसमें 38 अवदान संकलित है। इसकी भाषा महावस्तु की अपेक्षा शुद्ध संस्कृत में है। अशोकावदान, कृणालावदान, पासुप्रदानावदान इत्यादि। इसी ग्रन्थ में प्राप्त होते है। जो मौर्य सम्राट अशोक के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डालते है। सम्राट अशोक के उपलब्ध विविध धर्म अभिलेखों के अलावा श्रीलंका के ग्रन्थ महावंस से ही उसके जीवन और कार्यों पर प्रकाश पड़ता है। इस ग्रन्थ का सबसे पहले आर0ए0 नील और ई0बी0 कावेल ने मूल स्वरूप में रोमन लिपि में 1886 ई0 में प्रकाशित करवाया था। 63 वर्ष बाद देवनागरी लिपि में महोदय पी0एल0 वैद्य ने प्रकाशित करवाया। इस ग्रन्थ में हीनयान और महायान दोनों का समावेश मिलता है। पहले यह ग्रन्थ स्थविरवाद हीनयान का ग्रन्थ था बाद में महायान का ग्रन्थ बताया गया।[8]

बुद्ध चरित प्रथम शताब्दी ई0 में कुषाण सम्राट कनिक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिये चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया था। उसके धार्मिक गुरु अश्वघोष थे जो साकेत के निवासी और वैदिक परम्परा के विद्वान तथा शास्त्रार्थ में पारंगत थे। नालन्द महाविहार में बौद्धाचार्य आर्यदेव से शास्त्रार्थ में पराजित होकर उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया था। नालन्दा महाविहार में ही उन्होंने बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया और पालि साहित्य के आधार पर बुद्ध चरित महाकाव्य की संस्कृत में रचना की। इस महाकाव्य में 28 सर्ग है। भारत में विलुप्त इस ग्रन्थ को सबसे पहले ई0बी0 कावेल ने 1893–94 ई0 में

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

आक्सफोर्ड से प्रकाशित करवाया था।

बुद्धचरित को हिन्दी अनुवाद सबसे पहले 1953–54 ई0 में सूर्य नारायण चौधरी ने सम्पादित कर पूर्णिया (बिहार–प्रदेश) से प्रकाशित करवाया था। इसमें 16 सर्ग श्लोक अनुवाद सहित और शेष सर्ग हिन्दी अनुवाद मात्र थे।[9] इस ग्रन्थ की बुद्ध कथा भगवत्प्रसूति से आरम्भ होती है और संवेगोत्पति, अभितिष्क्रमण, मारविजय, संबोधि, धर्म चक्रप्रवर्तन, परिनिर्वाण आदि घटनाओं का वर्णन प्रथम धर्म संगीति और अषोक के राज्य काल पर परिसमाप्त होती है।[10]

सौन्दरनन्द बौद्ध साहित्य का आचार्य अश्वघोष विरचित दूसरा ग्रन्थ है जिसमें नन्द और उनकी नव विवाहित पत्नी सुन्दरी की कथा काव्य रूप में वर्णित है। यह अपने ढंग का बौद्ध दर्शन को समाहित करने वाला अनूठा काव्य है। इसमें कुल अट्ठारह सर्ग है। यह ग्रन्थ भारत में अनुपलब्ध था। इस महाकाव्य को हर प्रसाद शास्त्री ने नेपाल के शाही ग्रन्थालय से खोज निकाला और 1910 ई0 में कोलकाता से इसे प्रकाशित किया गया। इसका हिन्दी अनुवाद सहित इसे 1948 ई0 में जन–जन तक पहुँचाने का श्रेय महोदय सूर्य नारायण चौधरी पूर्णिया को ही है। इसमें एक नवयुवक की कथा है जिसका अनुचित सम्बन्ध मगधवती से हो गया और जिसने बौद्ध धर्म में दीक्षा ली।[11]

वज्र सूची अश्वघोष की तीसरी रचना है जो चम्पूकाव्य के रूप में लिखी गई है। जिसमें जाति–पाति के खण्डन का वर्णन है। वज्र की नोक के समान होने के कारण इसका नाम वज्र सूची रखा गया। इसका सबसे पहले सम्पादन और प्रकाशन ए0 वेबर महोदय ने वर्लिन से 1850 ई0 में करवाया था। 1960 ई0 में विश्वभारती कलकत्ता, उसके बाद 1966 ई0 में भिक्षु प्रज्ञानन्द ने बुद्ध विहार, रिसालदार पार्क, लखनऊ से इसे हिन्दी अनुवाद सहित, प्रो0 संघसेन सिंह दिल्ली से तथा 2002 में डॉ0 जयन्ती प्रसाद ने वज्र सूची को हिन्दी में प्रकाशित (जिला–महाराजगंज उ0प्र0) करवाया था।[12]

ललित विस्तर साहित्यिक भाषा में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन चरित वर्णित है। इस ग्रन्थ में भगवान बुद्ध को अलौकिक पुरुष और देवस्वरूप में प्रदर्शित किया गया है। सबसे पहले इस ग्रन्थ को डॉ0 राजेन्द्रलाल मित्रा ने देवनागरी लिपि में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (कोलकाता) से 1817 ई0 में प्रकाशित करवाया था। ललित विस्तर संस्कृत बौद्ध साहित्य का इतना प्रिय ग्रन्थ था कि सर इरविन अर्नाल्ड ने लाइट ऑफ एशिया नाम से इसका अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। शान्ति भिक्षु शास्त्री ने ललित विस्तर का हिन्दी अनुवाद किया जो उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[13] इसमें बुद्ध चरित का वर्णन है। भूमण्डल में भगवान बुद्ध जो क्रीडा की उसका वर्णन होने के कारण इसे इस ग्रन्थ का नाम ललित विस्तर पड़ा। अभिनिष्क्रमण सूत्र के अनुसार इसको महाव्यूह भी कहते है।[14] इस ग्रन्थ के पहले अध्याय में यह वर्णित किया गया कि एक रात्रि के समय मध्ययाम में भगवान समाधित्थ हुए। उसी क्षण भगवान उण्णीश विवर से प्रादुर्भूत हुए और सब देव भवनों को अपने प्रकाश से अवभासित किया। भगवान गौतम बुद्ध का तुषित लोक मे ंनिवास, गर्भावक्रान्ति, जन्म, बालचर्या इत्यादि का वर्णन है।[15] भगवान गौतम ने जनकाय के कल्याण और सुख के लिये तथा सद्धर्म की बुद्धि के लिए देवपुत्रों की प्रार्थना स्वीकार किया। बोधिसत्व ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेने का निश्चय किया।

भगवान ने बतलाया कि वह शुद्धोदन की महिषी माया देवी के गर्भ से उत्पन्न होंगे। वह माया देवी, शीलवती और पतिव्रता है, परपुरुष का स्वप्न में भी ध्यान नहीं करती। उनके जैसी दूसरी स्त्री जम्बूद्वीप में नहीं है, जो बोधिसत्व के तुल्य महापुरुष का गर्भधारण करने में समर्थ हो उन्हे ंदशहस्र नागों का बल प्राप्त है। जब बोधिसत्व ने जन्म लिया तो उस समय नाना प्रकार के प्रतिहार्य उदति हुए, सब ऋतु और समय के वृक्षों में फूल–फल लगने लगे, बताया गया है। इसी पुस्तक के सातवे अध्याय में आनन्द और बुद्ध का संवाद भी मिलते है। बोधिसत्व ने ब्राह्मी, खरोष्ठी, अंग, वंग, मगध आदि 64 लिपियाँ बतायी है। ललितविस्तर का चीनी अनुवाद ईसा की पहली शताब्दी में हुआ था।[16]

माध्यमककारिका बहुचर्चित ग्रन्थ है जो नागार्जुन द्वारा लिखा गया है। इसे माध्यमिका सूत्र भी कहा गया है। यह एक वैज्ञानिक ढंग से लिखा हुआ दर्षन ग्रन्थ है। इस पर चन्द्र कीर्ति की प्रसन्नपद नामक टीका लिखा गया है। जिसे 1903 ई0 में बिब्लोथिका बुद्धिका में एल0डे0 ला वली पुसिन ने सेण्ट पिटर्स वर्ग से प्रकाशित करवाया था। इस ग्रन्थ में थेरवाद के अनात्मवाद को नकारा गया और षाष्वत आत्मवाद का खण्डन इस ग्रन्थ में किया गया है। 'है' और 'नहीं' के मध्य का सिद्धान्त प्रतिपादित होने के कारण ही इसे माध्यमिका शास्त्र या सूत्र कहा गया है।[17]

सद्धर्म पुण्डरीक का बौद्ध साहित्य ग्रन्थों में महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें हीनयान और महायान का प्रथम बार प्रयोग इसी ग्रन्थ में हुआ। इसमें बताया गया है कि हीनयान सम्पूर्ण मानव समाज की निर्वाण प्राप्त करा सकता है। ऐसा इस ग्रन्थ में बताया गया है। 1884 ई0 में एच0 कर्न महोदय ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद कराया जो आक्सफोर्ड से प्रकाशित हुआ। डॉ0 नलिनाक्ष दत्त ने 1953 ई0 में कोलकाता से देवनागरी में इसे प्रकाशित करवाया। इसके मूल ग्रन्थ को हिन्दी भाषा में, बौद्ध जनों तक पहुँचाने का श्रेय डॉ0 राममोहन दास और विहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना को है।[18]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

दशभूमिका सूत्र साहित्य को अवतंसक का एक भाग समझा जाता है। इसमें दशभूमियों का वर्णन है जिनसे भगवान बुद्ध के बुद्धत्व की प्राप्ति के बारे में बताया गया है। इस ग्रन्थ का चीनी अनुवाद धर्मरक्ष ने सन् 297 ई0 में किया था।[19] यह ग्रन्थ बोधिसत्व की जीवनशैली, ज्ञान, ध्यान की दश अवस्थाओं से सम्बन्धित है। सबसे पहले डॉ0 जोनेस राउर ने इसे प्रकाशित किया था बाद में पी0एल0 वैद्य ने मिथिला, विद्यापीठ दरभंगा से इसे 1967 ई0 में प्रकाशित किया था।[20] राष्ट्रपाल परिपृच्छा सूत्र को छठी शताब्दी ई0पू0 के पहले का साहित्य माना गया है। इसमें राष्ट्रपाल श्रावस्ती से त्रैमास्य के प्रत्यय पर भगवान के दर्शन के आने और अभिवादन करके तथागत से बोधिसत्वचर्या के बारे में प्रश्न किया तब तथागत ने उसे बोधिसत्वचर्या का उपदेश दिया। लगभग द्वितीय प्रथम शताब्दी ई0पू0 भारत के उत्तर–पश्चिमी प्रान्त पर शासन करने वाले ग्रीक राजा मिनाण्डर के बौद्ध धर्म स्वीकार करने के रोचकपूर्ण तथ्यों का उल्लेख इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ में मुख्य रूप से बौद्ध भिक्षु नागसेन एवं राजा मिलिन्द के बीच बौद्ध धर्म दर्शन सम्बन्धी तर्कपूर्ण प्रश्नों का समाधान ही इस ग्रन्थ की मूल विषय वस्तु है।[22]

बुद्धचरित में उपलब्ध सन्दर्भों से स्पष्ट होता है कि इस साहित्य में भगवान बुद्ध के जन्म, जीवन के विविध आयामों का वर्णन है तथा उस काल के बौद्ध जीवन दर्शन एवं समाज के बारे में पता चलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शास्त्री द्वारिकादास स्वामी, बुद्ध चरितम्, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, संस्करण–2018, पृ0 III, IV.
2. उपाध्याय आचार्य बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण–2011, पृ0 5.
3. वही, पृ0 6.
4. नरेन्द्रदेव आचार्य, बौद्ध धर्म दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, संस्करण–2013, पृ0 1.
5. त्रिपाठी डॉ0 बाके बिहारी मणि, सत्यदेव अभिनव, प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन की रूपरेखा, भवदीय प्रकाशन, श्रृंगार हाट अयोध्या, संस्करण–2005, पृ0 89.
6. लाल डॉ0 अँगने बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उ0प्र0, हिन्दी संस्थान लखनऊ, प्रथम संस्करण–2008, पृ0 51.
7. वही, पृ0 52.
8. वही, पृ0 53.
9. वही, पृ0 53, 54.
10. नरेन्द्रदेव आचार्य, बौद्ध धर्म दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, संस्करण–2013, पृ0 137.
11. लाल डॉ0 अँगने बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उ0प्र0, हिन्दी संस्थान, लखनऊ, प्रथम संस्करण–2008, पृ0 54.
12. वही, पृ0 54.
13. वही, पृ0 55.
14. नरेन्द्रदेव आचार्य, बौद्ध धर्म दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, संस्करण–2013, पृ0 131.
15. वही, पृ0 131.
16. वही, पृ0 132, 133, 135.
17. लाल, डॉ0 अँगने, बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, संस्करण–2008, पृ0 55.
18. वही, पृ0 57.
19. नरेन्द्रदेव आचार्य, बौद्ध धर्म दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, संस्करण–1993, पृ0 156
20. लाल, डॉ0 अँगने, बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, संस्करण–2008, पृ0 58.
21. नरेन्द्रदेव आचार्य, बौद्ध धर्म दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, संस्करण–1993, पृ0 155, 156
22. द्विवेदी, डॉ0 मनीष कुमार, दूबे डॉ राजदेव, बौद्ध साहित्य का सांस्कृतिक विमर्श कला एवं धर्म, शोध संस्थान वाराणसी, संस्करण–2013, पृ0 20.

*****